www.PapaCambridge.com

UNIVERSITY OF CAMBRIDGE INTERNATIONAL EXAMINATIONS
International General Certificate of Secondary Education

CANDIDATE NAME

CENTRE NUMBER

CANDIDATE NUMBER

3352550031

HINDI AS A SECOND LANGUAGE **0549/01**

Paper 1 Reading and Writing **May/June 2010**

2 hours

Candidates answer on the Question Paper.

No Additional Materials are required.

READ THESE INSTRUCTIONS FIRST

Write your Centre number, candidate number and name on all the work you hand in.
Write in dark blue or black pen.
Do not use staples, paper clips, highlighters, glue or correction fluid.
DO **NOT** WRITE IN ANY BARCODES.

Answer **all** questions.

At the end of the examination, fasten all your work securely together.
The number of marks is given in brackets [ ] at the end of each question or part question.

For Examiner's Use	
Section 1	
Section 2	
Total	

This document consists of **12** printed pages.

DC (KN/TL) 22994/4
© UCLES 2010

UNIVERSITY *of* CAMBRIDGE
International Examinations

[Turn over

www.PapaCambridge.com

खंड 1

अभ्यास 1 प्रश्न 1-6.

सदभाव का उत्सव 'फूल वालों की सैर' पर आलेख पढ़िए तथा दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

राष्ट्रीय एकता और सांप्रदायिक सदभाव का उत्सव 'फूल वालों की सैर' एक अनूठे मेले के रूप में चर्चित रहा है जिसका आयोजन अंजुमन-सैर-ए-गुल फरोशाँ नामक संस्था सन् 1961 से लगातार करती आ रही है। इस समारोह का आकर्षण हिंदू-मुस्लिम सांप्रदायिक सौहार्द का प्रतीक रंग-बिरंगा पंखा है जो हर साल उपराज्यपाल को पेश किया जाता है।

फूलवालों का काफ़िला लाल किले से इत्र और फूलों की सुगंध बिखेरता हुआ 32 किलोमीटर की दूरी तय करके महरौली स्थित कुतुब मीनार के करीब ख्वाज़ा बख़्तियार काकी की मज़ार पर फूलों की चादर चढ़ाने हर साल आता है। दूसरे दिन परंपरागत ढंग से इसी मज़ार के समीप योगमाया महालक्ष्मी मंदिर में फूलों का छत्र चढ़ाया जाता है। इस मेले का समापन शनिवार को 'जहाज़ महल' में एक भव्य समारोह के साथ होता है। इस मौक़े पर रात भर कव्वाली और नृत्य के बीच जश्न का माहौल रहता है। पुरानी दिल्ली के निवासी मोहम्मद शम्सी कहते हैं कि "समय के साथ इस मेले की रौनक कम हो गई है। बस रस्म ही रह गई है। मैं यहाँ हर साल आता हूँ पर अब पहले वाला आनंद नहीं मिलता है।"

'फूलवालों की सैर' की शुरूआत अकबर शाह द्वितीय (1806-1837) के शासन काल में हुई। बादशाह अपने छोटे पुत्र मिर्ज़ा जहाँगीर को अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहते थे। ब्रिटिश रेजीडेंट सर सीटन ने इस बात को मंजूर नहीं किया। मिर्ज़ा जहाँगीर ने खुले दरबार में उनका अपमान किया। एक दिन जब शाहज़ादा लालकिले में नौबतखाने पर मौज मना रहा था तभी वहाँ से सीटन हाथी पर गुज़रा। मिर्ज़ा जहाँगीर ने उस पर गोली चलाई।

रेजीडेंट तो बच गया, लेकिन उसका सेवक मारा गया। इसी आरोप में शाहज़ादे को इलाहाबाद के लिए निर्वासित कर दिया गया। उनकी माँ ने उसी समय अपने बेटे के बरी होने पर ख़्वाजा बख़्तियार काकी के मज़ार पर फूलों की चादर चढ़ाने की मन्नत मानी और फिर अपने बेटे की रिहाई पर फूलों की चादर चढ़ा कर अपनी मन्नत पूरी की। दिल्ली के हिंदुओं ने योगमाया मंदिर में भेंट चढ़ाकर अपनी भागीदारी निभाई। यह तीन दिनों का समारोह इतना शानदार रहा कि बादशाह ने इसे हर साल मनाने का ऐलान किया। 1942 में अँग्रेजों ने इसे बंद कर दिया लेकिन 1961 में अंजुमन सैरे-गुलफ़रोशाँ की कोशिश से यह दोबारा शुरू हुआ और तब से आज तक यह सिलसिला जारी है।

www.PapaCambridge.com

1 फूलवालों की सैर किस भावना का प्रतीक है?

.... [1]

2 फूलवालों का काफ़िला कहां पहुंचता है?

.... [1]

3 'जहाज महल' का क्या महत्त्व है?

.... [1]

4 मिर्ज़ा जहाँगीर ने सर सीटन पर गोली क्यों चलाई?

.... [1]

5 मिर्ज़ा जहाँगीर के बरी होने की मन्नत को कैसे पूरा किया गया?

.... [1]

6 इस मौके पर हिंदुओं ने क्या किया?

.... [1]

[अंक: 6]

www.PapaCambridge.com

अभ्यास 2 प्रश्न 7

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय,

शास्त्री भवन, नई दिल्ली 110001

दूरभाष 27349845, 27345984

असाधारण बच्चों से आवेदन पत्र आमंत्रित

शिक्षा, कला, संस्कृति तथा खेलकूद आदि क्षेत्रों में असाधारण उपलब्धियों के लिए 4 वर्ष से 15 वर्ष की आयु के बच्चों को राष्ट्रीय स्तर पर चयनित करने हेतु आवेदन पत्र आमंत्रित किये जा रहे हैं।
राष्ट्रीय स्तर पर चयनित बच्चों को 20 हजार रुपये नकद, एक प्रतीक चिन्ह एवं स्वर्ण पदक देकर सम्मानित किया जाएगा।
इस संबंध में सभी जिला कलक्टरों को पत्र भेजकर कहा गया है कि वे राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए अपने जिले के प्रतिभावान बच्चों के नाम की अनुशंसा करें।
यह अनुशंसा निम्नलिखित विभागों से की जा सकती है।

1. निर्वाचित संस्थाओं के प्रतिनिधि 2. सांसद व विधायक 3. प्रतिष्ठित स्वैच्छिक संगठन सीधे ही महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली को अनुशंसा 31 जुलाई, 2010 तक भेज सकते हैं।

लक्ष्मी गोविंद की उम्र 14 वर्ष है। वह कानपुर में रहती है। उसने दसवीं कक्षा की परीक्षा में 82 प्रतिशत अंक लेकर पूरे राज्य में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। इंद्राविहार के 52 नंबर मकान में वह पिछले पाँच वर्षों से रह रही है। उसका टेलिफोन न. 55234579 है। वह विज्ञान, इतिहास और साहित्य की परीक्षा में 80 प्रतिशत अंक अर्जित करने के साथ ही गणित में पूरे 100 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाली छात्रा है। लक्ष्मी गोविंद नृत्य में विशेष रूचि लेती है और 8 वर्ष की आयु से कत्थक सीख रही है।

लक्ष्मी गोविंद ने यह विज्ञापन देखा और वह इस पुरस्कार के लिए आवेदन करना चाहती हैं।

www.PapaCambridge.com

आप अपने को लक्ष्मी गोविंद मानकर नीचे दिए गए आवेदन पत्र को भरिए।

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय,

शास्त्री भवन, नई दिल्ली **110001**

दूरभाष **27349845, 27345984**

आवेदक का नाम.....**लक्ष्मी गोविंद**.....

आयु - ....

स्थायी पता ....

....

दूरभाष ....

असाधरण श्रेणी चुनिए

शिक्षा ☐ कला ☐ संस्कृति ☐ खेलकूद ☐

असाधरण कार्य का विवरण

....

....

....

....

www.PapaCambridge.com

अभ्यास 3 प्रश्न 8–11

ध्वनि प्रदूषण पर निम्नलिखित लेख पढ़िए।

अगले पृष्ठ पर दिए गए कार्य को निर्देशानुसार पूरा कीजिए।

ध्वनि प्रदूषण

शोर एक अनचाही ध्वनि है। जो ध्वनि कुछ को अच्छी लगती है वही दूसरों को नापसन्द हो सकती है। यह विभिन्न घटकों पर आधारित होती है। प्राकृतिक वातावरण हवा, समुद्री जानवरों, पक्षियों की स्वीकार युक्त आवाजों से भरा होता है। मनुष्य द्वारा निर्मित ध्वनियों में मशीन, कारें, रेलगाड़ियाँ, हवाई जहाज, पटाखे, विस्फोटक आदि शामिल हैं। जो कि ज़्यादा विवादित हैं। दोनों तरह के ध्वनि प्रदूषण, नींद, श्रवण, संवाद को ही नहीं यहाँ तक की शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करते हैं।

यह सिद्ध हो गया है कि ध्वनि प्रदूषण, वायु प्रदूषण का महत्वपूर्ण हिस्सा है। जिसे पहले वस्तुजनित प्रदूषण का हिस्सा माना जाता था। ध्वनि प्रदूषण अब औद्योगिक पर्यावरण का अनिवार्य अंग है जो कि औद्योगिक शहरीकरण के बढ़ने के साथ बढ़ता ही जा रहा है। यहाँ तक की गैर औद्योगिक क्षेत्रों में भी छपाई रंगाई की मशीन, कारों की मरम्मत, ग्राइंडिंग आदि कार्यों से आस-पास के वातावरण से शोर पैदा होता रहता है। यह शोर न केवल चिड़चिड़ाहट, गुस्सा पैदा करता है बल्कि धमनियों में रक्त संचार को बढ़ाकर कर हृदय की धड़कन को तीव्र कर देता है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों का मानना है कि बढ़ता शोर स्नायविक बीमारी, नर्वसब्रेक डाउन आदि को जन्म देता है।

शोर, हवा के माध्यम से संचरण करता है। ध्वनि की तीव्रता को नापने की निर्धारित इकाई को डेसीबल कहते हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि 100 डेसीबल से अधिक की ध्वनि हमारी श्रवण शक्ति पर असर डालती है। मनुष्य को न्यूरॉटिक बनाती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 45 डेसीबल की ध्वनि को, शहरों के लिए आदर्श माना है। बड़े शहरों में ध्वनि का माप 90 डेसीबल से अधिक हो जाता है। मुम्बई संसार का तीसरा, सबसे अधिक शोर वाला नगर है। दिल्ली ठीक उसके पीछे है।

www.PapaCambridge.com

आपके स्कूल में प्रदूषण रोको दिवस मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आपको एक भाषण तैयार करना है। अपने भाषण के लिए ध्वनि प्रदूषण नामक लेख में से नीचे दिए गए प्रत्येक शीर्षक के अंतर्गत टिप्पणियां लिखें जिसपर आपका भाषण आधारित हो

8 विभिन्न ध्वनियों के प्रकार

(i) .... [1]

(ii) .... [1]

9 ध्वनि प्रदूषण फैलने के कारण

(i) .... [1]

(ii) .... [1]

10 ध्वनि प्रदूषण के दुष्प्रभाव

(i) .... [1]

(ii) .... [1]

11 भारत का सर्वाधिक ध्वनि प्रदूषित शहर

.... [1]

[अंक:7]

www.PapaCambridge.com

अभ्यास 4 प्रश्न – 12

निम्नलिखित आलेख के आधार पर सारांश लिखिए और बताइए कि क्या सचमुच मशीनें सारी तकलीफें दूर कर सकती हैं? आलेख की मुख्य बातों को अपने शब्दों में लिखिए। आपका सारांश 100 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

संगत बिन्दुओं के समावेश पर 6 अंक और भाषिक अभिव्यक्ति के लिए 4 अंक निर्धारित हैं। पाठांश से वाक्य उतारना उचित नहीं है।

मशीनें सारी तकलीफें दूर नहीं कर सकती

हमारे अनुभव तथा भावनाएँ मूल रूप से हमारे शरीर तथा मन पर निर्भर होती हैं। रोज़मर्रा की ज़िंदगी के अनुभव के आधार पर हम यह जानते हैं कि मन की खुशी लाभदायी होती है। उदाहरण के लिए दो अलग-अलग आदमी एक ही तरह के दुख को झेलते हैं, परंतु उनमें से एक अपने मन की शक्ति की वजह से उस दुख का सामना अधिक आसानी से कर सकता है। मेरे विचार में ऐसा सोचना ग़लत है कि मशीनें आदमी की सभी तकलीफें दूर कर सकती हैं। बेशक आरामदायी चीजें बहुत उपयोगी हैं, पर साथ-साथ यह भी स्वाभाविक है कि हमारी सभी समस्याएँ केवल इन भौतिक सुख-सुविधाओं की वस्तुओं से दूर नहीं हो सकती। भौतिक वस्तुओं से भरे समाज में अधिक नहीं तो उतनी ही मानसिक अशांति और निराशा है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि आख़िरकार हम मनुष्य हैं। हम मशीनों से नहीं बने और हमारे शरीर मशीनों से अलग हैं। इसलिए हमें अपनी आंतरिक क्षमताओं और गहरे जीवन-मूल्यों के प्रति गंभीरता से सोचना चाहिए। मेरा यह विश्वास है कि यदि कोई सुखी जीवन चाहता है तो आंतरिक और बाहरी दोनों ही बातों की ओर, दूसरे शब्दों में भौतिक और मानसिक विकास की ओर ध्यान देना आवश्यक है। हम आध्यात्मिक विकास की भी बात कर सकते हैं, परंतु जब मैं आध्यात्मिक कहता हूँ तो मेरा मतलब किसी खास धर्म से नहीं है। जब मैं आध्यात्मिक बल की बात करता हूँ तो मेरा मतलब मनुष्य के अच्छे गुणों से है। ये गुण जन्म से मिले हुए हैं। ये सब हमारे जीवन में बाद में नहीं आते। धर्म के प्रति विश्वास बाद में आता है। सभी धार्मिक उपदेश हमें एक अच्छा आदमी बनने की सलाह देते हैं। ये उपदेश हमारे जन्मजात अच्छे गुणों को और शक्तिशाली बनाते हैं। हम सभी के अंदर सृजन करने का एक बहुत ही सहज गुण होता है, जिसकी पहचान बहुत ही ज़रूरी है।

www.PapaCambridge.com

[अंक:10]

www.PapaCambridge.com

खंड 2

अभ्यास 5 प्रश्न 13–19

भारतीय मसालों पर लिखे इस आलेख को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

एक लोककथा है कि एक वैद्यजी थे। उनके बग़ल के घर में नगरश्रेष्ठि विराजते थे। दोनों घरों के बीच साझा दीवार होने से उधर की बातें इधर और इधर की बातें उधर कानों में पड़ना स्वाभाविक था। जाड़े के दिन थे। शाम का खाना जीमने बैठे नगरश्रेष्ठि को वैद्यजी ने कहते सुना कि उन्हें एक कटोरा भर दही भी दिया जाए। वैद्यजी ने बहू से कहा, जाड़े की शाम को कटोरा भर दही दिया जाए। इतना सुनकर वैद्यजी ने अपनी बहू से कहा "जाड़े की शाम को एक कटोरा भर दही खाकर नगरश्रेष्ठि सर्दी और खांसी को निमंत्रण दे रहे हैं। देखना कल ही मुझे उनके इलाज से इतने पैसे मिलेंगे कि तेरे कंगन की जोड़ी पक्की"।

बहू उमंग से उछलती भीतर चली गई। तभी सेठानी की आवाज आई। परसने वाली से उन्होंने कहा कि सेठजी के दही में वह अच्छी चुटकी काली मिर्च, भुने जीरे और काले नमक की बुकनी डालना न भूले, हाँ .. । इतना सुनकर वैद्यजी का चेहरा उतर गया और वे बहू से बोले "अब तो सालभर तक तेरे कंगन बनने से रहे"।

इसी प्रकार हमारे यहाँ घर-घर में रसोई को रससिद्ध बनाने वाले मिर्च-मसालों से जुड़ी मनोरंजक गाथाएं हमारी लोककथाओं, पुराणों और इतिहास में यहाँ से वहाँ तक विराजमान हैं। उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक फैले विशाल देश में खान पान में जो विविधता है वही विविधता मसालों के प्रयोग में भी है। हमारी भाषा और साहित्य की ही तरह हमारे मसाले भी भारतीय और गैर भारतीय तत्वों का एक मिला-जुला खजाना है। उदाहरण के लिए ईसा की पहली सदी तक दक्षिण भारत में चीन से चीनी आती थी। शेष भारत शहद और गुड़ से काम चलाता था। फिर धीरे-धीरे चीनी का ऐसा चस्का उत्तर को भी लग गया, कि वहाँ चीनी के स्वरूप में सुधार भी होने लगे। चाय की ही तरह चीन से दालचीनी आई तो कपूर और राई भी आए। दक्षिण भारत में कपूर को आज भी 'चीन कर्पूर' कहते हैं।

मेथी दाना आयुर्वेद की राय में मधुमेह रोगियों के लिए उत्तम दवा है। जिसका प्रयोग जेवनारों में दिव्य सब्ज़ियां या जाड़ों के मेथीपाक जैसे व्यंजन बनाने में सहायक होता है। मेथी भी सदियों पूर्व भारत में यूनान के व्यापारियों के साथ भारत आया। बंगाली खाने की जान पंचफोड़न (यानी मेथी, सौंफ, जीरा, पीली सरसों और कलौंजी इन पांच मसालों के मिश्रण) में भी मेथी विराजमान है। पंचफोड़न के दो अन्य मसाले सौंफ और जीरा भी भूमध्यसागरीय क्षेत्र से ही भारत आए। अचार, चटनी, मुरब्बे के अलावा उदर रोगों के लिए भी सौंफ का एक शीतलता देने वाले मसाले के रूप में प्रयोग होता है। इसी प्रकार जीरे का प्रयोग भारत के सभी प्रांतों में बहुलता से होता है। इसको पाचन क्रिया में मददगार और फ़ितरत (स्वभाव) से गर्म बताया गया है। औषधि के रूप में इसके प्रयोग का वर्णन आयुर्वेदज्ञ चरक ने अपनी पुस्तक 'चरक संहिता' में किया है। शल्य चिकित्सक सुश्रुत ने भी दवा के रूप में इसे उपयोगी बताया है।

www.PapaCambridge.com

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सही और ग़लत का निशान लगाकर दीजिए।

यदि वाक्य ग़लत है तो पाठांश के आधार पर वह वाक्य भी लिखिए जिससे वाक्य सही साबित होता है।

	सही	ग़लत
उदाहरण – वैद्यजी का घर नगरश्रेष्ठि के घर के सामने था।	☐	✓

औचित्य – वैद्यजी के बग़ल के घर में नगरश्रेष्ठि रहते थे।

13 दोनों घरों के बीच एक जैसी दीवारें थीं। ☐ ☐

....

14 वैद्यजी ने अपनी बहू से कहा कि नगरश्रेष्ठि जाड़े की शाम को दही खाकर बीमारी को बुलावा दे रहे हैं। ☐ ☐

....

15 वैद्यजी आश्वस्त थे कि कल ही उन्हें बुलावा आएगा। ☐ ☐

....

16 सेठजी ने आवाज़ देकर काली मिर्च, काला नमक और जीरे की बुकनी डालने के लिए कहा। ☐ ☐

....

17 वैद्यजी ने यह क्यों कहा कि अब तेरे कंगन सालभर तक नहीं बनेंगे?

....[1]

18 भारतीय मसालों की तुलना भारतीय भाषा और साहित्य से क्यों की गई?

....[1]

19 खाने के अलावा मेथी और सौंफ का प्रयोग किस लिए किया जाता है?

....

....[2]

[अंक:10]

www.PapaCambridge.com

अभ्यास- 6

आज का संगीत सिर्फ़ शोर है?

आपके स्कूल में एक वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है जिसका विषय है 'आज का संगीत सिर्फ़ शोर है और कुछ नहीं'। आप इस प्रतियोगिता में हिस्सा लेना चाहते हैं। अपने विचारों को विषय के पक्ष या विपक्ष में प्रस्तुत करने के उद्देश्य से उत्तर लिखिए।

आपका उत्तर 150 या 200 शब्दों से ज़्यादा नहीं होना चाहिए।

लिखित उत्तर पर अंक विषय संबंधी अंतर्वस्तु, शैली और सही भाषा लिखने पर दिए जाएंगे।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

[अंक:20]

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (UCLES) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

University of Cambridge International Examinations is part of the Cambridge Assessment Group. Cambridge Assessment is the brand name of University of